विद्यापतिक रचनाक अन्य भाषा पर प्रभाव

डा. विजयेन्द्र झा.[1], निशु कुमारी[2]
[1]*पूर्व प्राचार्य, सम्प्रति-अध्यक्ष, मैथिली विभाग, एल. एन. टी. कालेज (अंगीभूत एकाइ- बी. आर. ए. बिहार विश्वविद्यालय) मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत*
[2]*शोधार्थी, (यूजीसी-नेट) मैथिली, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वर नगर, दरभंगा, बिहार, भारत*

***सारांश*—14म सदीमे मिथिला (बिहार) क साहित्याकाशमे एकटा एहन विभूतिक पदार्पण होइछ, जे अपन प्रतिभाक बलेँ एकटा क्षेत्रीय भाषाकेँ साहित्यक सर्वोच्य शिखरपर पहुँचाए देलनि।**

विद्यापतिक आगमन मैथिली साहित्यक ओहि कालखण्डमे भेल जाहि समय अनेक राष्ट्रीय आ' अन्तरराष्ट्रीय भाषा मात्र ठेहुँनियाँ दैत छल। मात्र विद्यापतिए एहन हस्ताक्षर छथि जनिक प्रभाव ने मात्र मिथिला अपितु मिथिलासँ बाहर चारि-चारि प्रान्त -बंगाल, आसाम, उडीसा तथा नेपालपर तँ पडबे कएल एकर अतिरिक्त विकासक बाट जोहैत अन्य उत्तर भारतीय भाषासभक सेहो पथ प्रदर्शक बनल। हिनकहिँ प्रभावक कारण बंगाल, आसाम आ' उडीसामे एकटा नवीन भाषाक उद्भव भेल जे ब्रजबुलि कहौलक। नेपालक समस्त 'संगीत नाटक' वा गीतिकाव्य स्पष्टतः विद्यापतिक प्रभावेँ मैथिली साहित्यक विशाल अट्टालिका स्थापित करबामे सक्षम भ' सकल। विभिन्न भारतीय साहित्य-जगतमे जे शृंगाररसक अजस्र धार बहाओल गेल अछि ओकरहुँ उत्स महाकविएक रचना थिक। निष्कर्षतः ई कहल जाए सकैछ जे महाकवि विद्यापतिक रचना, साहित्य रूपी ओ रत्नाकर अछि जाहिसँ प्रभावित भए समस्त भारतीय साहित्य अपन-अपन विकासक बाट जोहबामे सक्षम भ' सकल संगहि मिथिलाक पार्श्ववर्ती प्रान्त -बंगाल, आसाम, उडीसा तथा नेपालक भाषा-साहित्यक भूमिकेँ साहित्यिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक तथा ऐतिहासिक रूपेँ सिंचित करैत उर्वर बनौने रहल।

***बीज-शब्द*—अंकीयानाट', चैतन्य महाप्रभु, चण्डीदास, विद्यापतिक प्रभाव, प्रतिफलन, ब्रजबुलि, बैष्णव, रबीन्द्रनाथ ठाकुर, विषय-वस्तु, शंकरदेव, ज्ञानदास**

I. परिचय

मैथिली भाषा अपन मधुरता आ' प्राचीनताक लेल विश्वविख्यात अछि। विश्वक एहन कोनो भाषा नहि जे मैथिलीसँ प्राचीन होअए। ओना विविध कालखण्डमे एकर नाम आ' स्वरूप अवश्य भिन्न- भिन्न रहैत छल। आदिकवि महर्षि बाल्मीकि अपन रामायणमे मिथिलाक तत्कालीन भाषाकेँ 'मानुषी' भाषाक संज्ञा देलनि आ' पहिल संवाद लंकाक अशोक वाटिकामे हनुमानजी आ' जगज्जननी सीताजीक प्रसंग चरचा कएलनि अछि। पश्चात् मैथिलीक विकास क्रम संस्कृत-प्राकृत-अवहट्टक सीमाकेँ पार करैत ज्योतिरीश्वर ठाकुर आ' महाकवि विद्यापति धरि पहुँचैत अछि। ओना ज्योतिरीश्वरसँ पहिनहि मैथिली अपन स्वरूप पकडि लेने छल, मुदा लिखित साक्ष्यक अभावमे ज्योतिरीश्वर ठाकुरक वर्णरत्नाकरे (1324 ई.) केँ अद्यावधि पहिल गद्यग्रन्थक रूपमे मानल जाइछ।

एहिसँ पूर्व मौखिक परम्परा जाहिमे लोकसाहित्य, डाकवचन, मिथिलामे प्रचलित बुझौअलि, फकडा, मोहबरा आदि रहल अछि। ओना मैथिलीक प्राचीन सामग्रीक अन्तर्गत विविध भाषा-संस्कृत, प्राकृत, अवहट्ठ ग्रन्थादिमे मैथिलीक अंकुरण आ' प्रस्फुटन होइत रहत। पश्चात् डाकवचन, सिद्धसाहित्य, लोकसाहित्य (लोकगीत, लोकगाथा, लोककथा, लोकनाट्य, बुझौअलि, वाग्धारा आ' लोकोक्तिक रूपमे मैथिली एक पीढीसँ दोसर पीढीमे हस्तान्तरित होइत रहल। वर्तमानमे मैथिली एकटा स्वतंत्र भाषाक रूपमे भारतीय संविधानक अष्टम अनुसूचीमे 7 जनवरी, 2004 ई. सँ मान्य अछि।

महाकवि विद्यापतिक पदार्पण मैथिली साहित्यमे तखन होइत अछि जखन अन्य भारतीय आ' पाश्चात्य भाषा अपन गर्भे मे छल; जाहि समय चओसर (1340 ई.) अंग्रेजी साहित्यक निर्माण कए रहल छलाह। मैथिली साहित्यमे विद्यापतियुग ओतबे महत्वपूर्ण अछि, जतेक महत्वक अंग्रेजी साहित्यमे शेक्सपिअरक युग अछि। महाकवि विद्यापतिक प्रादुर्भाव बंगलाक कवि 'चण्डीदास' (1418 ई.), हिन्दीक 'सूरदास' (1435 ई.) आ' 'कबीरदास'(1497 ई.), असमियाक 'शंकरदेव'(1449 ई.), उडियाक कवि 'रमानन्द राय' (15म शताब्दीक मध्य) सँ बहुत पूर्वहि 1350-1450 ई. मध्य भेल

छलनि। वस्तुतः हिनकहिपर समस्त मैथिली साहित्यक गौरव आधारित अछि।

विद्यापतिक जन्म आ' अवसानक प्रसंग विद्वानलोकनिमे मतैक्य नहि अछि तथापि अधिकांश विद्वानक मतानुसार हिनक जन्म मिथिला नगरीक विसैवार विसपी मूलग्रामक विस्फी गाममे भेल छलनि जे बिहार राज्यक मधुबनी जिलामे पडैत अछि। हिनक पिता महामहोपाध्याय गणपति ठाकुर राजपण्डित छलाह। ई बाल्यकालहिसँ अपन पिताक संग राजदरबार जाइत छलाह। विद्यापति व्याकरण, साहित्य, धर्मशास्त्र, पुराण, ज्योतिष, तन्त्र, कर्मकाण्ड, नीतिशास्त्र आ' राजनीतिक मर्मज्ञ विद्वान् छलाह आ' पाँच भाषा - संस्कृत, प्राकृत, अवहट्ठ, मैथिली, फारसी आदिक ज्ञाता छलाह। ओना, छठम भाषा बंगला सेहो जनैत छलाह, जकर कोनो प्रमाण तँ नहि भेटैछ; मुदा, बंगला आ' मैथिलीक 'तिरहुता लिपि' मध्य ततेक ने साम्यता अछि जे मिथिलाक पण्डितलोकनि एकरा सहजतासँ लिखि-पढि लैत छलाह आ' एहिना बंगलाक विद्वानलोकनि मैथिली पढबामे सक्षम छलाह। गद्य-पद्य रचना-चातुरीक कारण महाकवि विद्यापति जन-जनमे प्रसिद्ध छलाह। ओ नैमिषारण्य (उ. प्र.) आ' दिल्लीक यात्रा कए अपन कवित्व प्रतिभाक बलेँ शाही कारागारसँ राजा शिवसिंहकेँ मुक्त करओलनि तथा अपन मधुर गीतसँ अनेक राजालोकनिक नामकेँ अमर बनओलनि। विद्यापतिक धर्मशास्त्रीय निर्णयकेँ मान्य आचार्यलोकनि, जेना- महामहोपाध्याय केशव मिश्र (1500 ई.) ' द्वैतपरिशिष्ट' मे, महामहोपाध्याय गणपति (1500 ई.) अपन 'गंगाभक्तितरंगिणी'मे, महामहोपाध्याय कमलाकर भट्ट 'निर्णयसिन्धु' आदि ग्रन्थादिमे उद्धृत कएने छथि।

विद्यापति संस्कृत साहित्यक अभेद्य किलाकेँ दृढतापूर्वक तोडि लोकभाषामे काव्य-रचना करबाक साहस कएलनि। हिनक ई काज परवर्तीकालक रचनाकारलोकनिक लेल सेहो अत्यन्त प्रेरक सिद्ध भेल। ई राजकविसँ जनकवि भ' गेलाह। स्पष्टतः महाकवि विद्यापति पूर्वोत्तर भारतक लोकभाषाक काव्य गगनमे उगल एकटा विराट नक्षत्र थिकाह। जँ विद्यापति रूपी सूर्यक आविर्भाव मैथिली काव्य-गगनमे नहि भेल रहैत, तँ रात्रिक व्याप्ति आ'र कतेक सए वर्ष बेसी भ' जाइत, से नहि कहि। निष्कर्षतः उत्तर आदिकाल (1300-1600 ई.) क तोरण-द्वारपर जाहि कविक नाम स्वर्णाक्षरमे अंकित अछि, ओ छथि महाकवि 'विद्यापति ठाकुर', जे एकहि संग बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न महाकवि, चिन्तक, शास्त्रकार, साहित्य रसिक, युगद्रष्टा आ' युगस्रष्टा महामानव छलाह। विद्यापति ठाकुर 14म शताब्दीक मिथिलाक अभूतपूर्व उपज छथि जे सर्वप्रथम लोकानुरंजनक हेतु लोकभाषामे काव्य-रचना कएलनि। हिनक काव्यधाराक भूमि परवर्ती रचनाकारलोकनिक लेल 'खाद'क काज कएलक, जे अत्यन्त उर्वर रहल।

विद्यापतिक रचना समूह हुनक व्यापक व्यक्तित्व आ' भाषा-ज्ञानक प्रमाण प्रस्तुत करैत अछि। हिनक समस्त रचना अपना युगक ज्ञानकोश तँ थिके, संगहि वैदिक परम्परा आ' युगचेतनाक प्रतीक सेहो थिक। हिनक रचनामे एक दिसि परम्पराक पालन होइछ तँ दोसर दिसि क्रान्तिक आह्वान भेटैछ। विद्यापति तत्कालीन सम्पूर्ण राष्ट्रकेँ जोडयबला लिंकभाषा-संस्कृतमे रचना क' कए एक दिसि अपन राष्ट्रीय चेतनाक प्रति कर्तव्य-बोध देखओलनि तँ दोसर दिसि अवहट्ठ (अपभ्रंश) क रचना द्वारा पूर्वांचलीय क्षेत्रीयताक अपन आत्मनिवेदन कएलनि; संगहि मैथिली-रचनासँ मातृभाषाक प्रति अपन दायित्वक निर्वाह कएलनि। तत्कालीन युगीन त्रिभाषा-रूप इएह छल, जे आइओ समस्त भारतवर्षक लेल सर्वथा प्रासंगिक अछि। महाकविक ई संतुलित रूप हुनक क्रान्तिदर्शी व्यक्तित्वक एकटा महान् उपलब्धि थिक जे हुनक राष्ट्रीय आ' सामाजिक चेतनाकेँ व्यक्त करैछ। स्पष्टतः विद्यापति अपन संस्कृत रचना द्वारा मिथिलाक अनुकूल वैदिक परम्पराक संपोषण कएलनि तँ अवहट्ठ (अपभ्रंश) रचना द्वारा अपन इतिहास-बोधक प्रकाशन कएलनि; संगहि मैथिली गीति रचना द्वारा अपन सामाजिक चेतनाकेँ प्रकट करैत क्रान्तिदर्शी, दूरदर्शिताक परिचय देलनि। विद्यापति युग-चेतनाक द्रष्टा आ' साहित्यक विद्वान् स्रष्टा छलाह।

एहि प्रकारेँ विद्यापतिक समय चौदहम शताब्दीक मध्यसँ ल' पन्द्रहम शताब्दीक मध्य धरि निर्धारित कएल गेल अछि। ओ जीवन भरि प्रायः ओइनवार नरेशलोकनिक संरक्षणमे रहि गीति ओ विभिन्न ग्रन्थक रचना कएलनि। हुनक रचना संस्कृत, अवहट्ठ आ' मैथिलीमे भेटैत अछि जे तद्युगीन साहित्यक तीन प्रकारक भाषा-शैलीक प्रतिनिधित्व करैत अछि। एकर अतिरिक्त ओ अपन संस्कृत नाटकमे प्राकृतक प्रयोग सेहो कएने छथि। स्पष्टतः विद्यापति बहुभाषाविद् छलाह।

पूर्वहि कहल अछि जे विद्यापति अद्यावधि तीनि भाषा-संस्कृत, अवहट्ठ (अपभ्रंश) आ' मैथिलीमे रचना कएलनि। ओना प्राकृत आ' बंगला समेत महाकवि छओ भाषा-'संस्कृत', 'प्राकृत', 'अवहट्ठ', 'मैथिली', 'फारसी' आ' 'बङला'क ज्ञाता छलाह। हिनक संस्कृत, अवहट्ठ आ' मैथिलीमे रचित पोथीक अवलोकनसँ प्राकृत, फारसी आदि भाषा-प्रयोगक प्रमाण भेटि जाइछ। संस्कृतमे हिनक भूपरिक्रमा (यात्रावृत्तान्त), पुरुषपरीक्षा (गद्य-पद्यात्मक नीति-दण्डनीतिसँ गुम्फित

रोचक कथासभ), मणिमंजरी नाटिका, लिखनावली, विभागसार, शैवसर्वश्वसार, दानवाक्यावली, गंगावाक्यावली, दुर्गाभक्तितरंगिणी, व्याडिभक्तितरंगिणी, गयापत्तलक, वर्षकृत्य, प्रश्नोत्तरमालिक, ज्योतिषसार-समुच्चय आदि अछि। विद्यापतिक अवहट्ठमे अद्यावधि तीन पुस्तक - कीर्तिलता (1402-5 ई.),कीर्तिगाथा (1402-5ई.) आ' कीर्तिपताका (1414 ई.) उपलब्ध अछि। ध्यातब्य जे 'कीर्तिगाथा' नामे स्वतंत्र पोथीक प्रकाशन 2025 ई.मे माण्डा पब्लिशर्स, दिल्लीसँ डा. विजयेन्द्र झा द्वारा करबाओल गेल अछि। मैथिलीमे विद्यापति करीब हजार (960) 'स्फुट' पदक रचना कएलनि जे पश्चात् पदावलीक रूपमे संकलित प्रकाशित करबाओल गेल। एकर अतिरिक्त मैथिलीमे हिनक एकटा त्रैभाषिक नाटक 'गोरक्षविजय' सेहो उपलब्ध अछि, जे कविशेखर ज्योतिरीश्व ठाकुरक 'धूर्त्तसमागम'क रीतिपर लिखल गेल अछि।

विद्यापतिक उपर्युक्त समस्त संस्कृत, प्राकृत, अवहट्ठ आ' मैथिली रचनाक विषय-वैविध्य, रूप-विधा आ' ज्ञान-संकलन देखि हुनक रचनासभकेँ समग्र रूपेँ 'ज्ञानकोश' कहल जाए सकैछ। इएह महाकविक व्यापक विराटता थिक।

II. सीखबाक प्रतिफलन

प्रस्तुत एकाइमे महाकवि विद्यापतिक' व्यक्तित्व-कृतित्व' तथा बंगाला, असमिया, उडिया, नेपाली तथा अन्य भारतीय भाषा कोन रूपेँ विद्यापतिसँ प्रभावित भेल अछि, तकर संक्षिप्त विवरण देल गेल अछि। विद्यापतिक प्रभावेँ मिथिलाक पार्श्ववर्ती प्रान्तसभमे एकटा कृत्रिम भाषा ब्रजबुलिक विकास, नेपालक संगीत नाटकसभमे प्रयुक्त गीतिकाव्यपर विद्यापतिक परम्परा तथा हिन्दी समेत अन्य भारतीय भाषापर विद्यापतिक रचनाक प्रभाव आदिक प्रसंग सूत्र रूपमे विवरण प्रस्तुत अछि। तेँ एहि एकाइमे विद्यापतिक परिचय, हुनक कार्यक्षेत्र तथा पार्श्ववर्ती प्रान्तक भाषासभपर हुनक रचना कोना आ' कतेक प्रभावित भेल तकर जानकारी छात्रलोकनिकेँ सहजहिँ भ' जएतनि।

III. विषय-वस्तु

प्रस्तुत एकाइ "विद्यापतिक रचनाक अन्य भाषापर प्रभाव" सान्दर्भिक अछि। विद्यापति बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्वक धनी छलाह, से लेखनीसँ सेहो आ' व्यक्तित्वसँ सेहो। तेँ हिनक प्रभाव चहुदिस व्यापित छलनि।ओना किछु आलोचकक मंतव्य छनि जे जा धरि अन्य प्रान्तक लोक विद्यापतिक महत्ताकेँ उजागर नहि कएलक ता धरि मिथिला-प्रान्तक लोक हुनक उपेक्षा करैत रहल अथवा हुनक प्रतिभासँ अनभिज्ञ रहल। एहि उक्तिमे आंशिक सत्यता अवश्य अछि, कारण विद्यापतिपर आधुनिक वैज्ञानिक आ' गहन अध्ययन एहिठाम बहुत पछाति प्रारंभ भेल, तकर कारण जे मिथिलामे अंग्रेजी शिक्षाक प्रचलन बहुत बादमे सुरूह भेल। मुदा, तकर तात्पर्य ई कथमपि नहि जे मिथिलामे विद्यापतिक महत्व नहि देल गेल छलनि। एहि प्रसंग डा. विजयेन्द्र झा अपन 'मैथिली साहित्यक इतिहास'मे लिखैत छथि, " विद्यापतिकेँ अपन जीवन कालहिमे पूर्ण प्रतिष्ठा आ' यश प्राप्त भ' गेल छलनि। अपना समयमे विद्यापतिकेँ राजदरबारमे उत्सुक आ' उन्मुख, रसज्ञ श्रोता भेटलनि। हुनका अनेक आश्रयदातासभक अनुग्रह प्राप्त छलनि"- (मै. सा. इतिहास, डा. विजयेन्द्र झा, पृ-490)। विद्यापति महाराज कीर्तिसिंहक जँ 'खेलन कवि' छलाह तँ शिवसिंह आ' हुनक रानी महादेवी लखिमाक ई 'अभिनव जयदेव' छलाह, जनिकासँ हिनका 'विसफी गाम' दानमे भेटल छलनि। अपन उमेरिआलोकनिक ई 'सुकवि', 'सुकविकण्ठहार', 'सरस कवि' छलाह तथा सामान्य लोकक लेल विद्यापति मिथिलामे प्रचलित व्यवहार गीत, शिव-शक्तिक भक्ति-गीतक एकटा लोकप्रिय गायक छलाह। एकर प्रमाण 'अबुल फजल'क 'आइने अकबरी' (1598 ई.) क संगीत-प्रकरणमे 'विद्यापतिक लचारी'क प्रसिद्धिक उल्लेख सिद्ध अछि तथा लखन सेनी सेहो 'हरिचरितक विराट पर्व 'मे हिनक 'लचारी 'क चरचा कएने छथि। लोचन अपन 'रागतरंगिणी 'मे हिनका प्रसंग जे किछु कहने छथि, ताहिसँ प्रतीत होइछ जे विद्यापतिक संगीतक गायकलोकनिक एकटा विशेष परम्परा एहिठाम सुरूह भ' गेल छल। विद्यापतिक अनुकरण-विषय, छन्द आ' शैली तीनू दृष्टिएँ मिथिलाक संग-संग बङाल, आसाम, उड़ीसा आ' नेपाल, सभ प्रान्तमे पसरल। स्पष्टतः चौदहम सदीक साहित्याकाशमे महाकवि विद्यापतिक काव्य-प्रतिभा एहि प्रकारेँ प्रस्फुटित भेल जे मिथिलाक कोन कथा, एकर समीपस्थ प्रान्तहुँ सबहिक साहित्यपर अपन पदचाप जमओलक आ' एकरे परिणामस्वरूप बंगाल, आसाम, उडीसामे ब्रजबुलि साहित्यक जन्म भेल। ई ब्रजबुलि साहित्य एकटा संकर भाषामे रचल जाइत छल, जकर मूल आधार तँ विद्यापतिक मैथिलीए पद रहैत छल मुदा ओहिमे ओहिठामक भाषाकेँ सन्हिआए देल जाइत छल अर्थात् बंगालमे बंगला, आसाममे असमिया, उडीसामे उडिया आदि पद विद्यापतिक पदमे घौँसिआओल गेल जाहिसँ एकटा नब संकर भाषा जन्म लेलक, जे ब्रजबुलि नामे अभिहीत भेल। एहिसँ अनुमान लगाओल जा सकैछ जे विद्यापतिक कतेक प्रभाव अन्य प्रान्तीय भाषासभपर पडल।

IV. बंगलापर विद्यापतिक भाषाक प्रभाव

महाकवि विद्यापतिक प्रभाव ने मात्र मिथिला धरि सीमित रहल; अपितु, मिथिलाक निकटवर्ती प्रान्तसभ सेहो हिनका गीतसँ प्रभावित भेल। अपन प्रान्त मिथिलामे ई शृंगार रसक गीतकार आ' शिव-भक्त रूपमे ख्यात छलाह, मुदा मिथिलासँ बाहर बडाल, आसाम, उड़ीसा आदि प्रान्तमे ई एकटा महान् वैष्णव रूपमे प्रख्यात भेलाह। विद्यापति प्राच्य भारतक पहिल एहन गायक आ' गीतकार भेलाह जे देशभाषाकेँ साहित्यिक भाषाक उच्च शिखरपर पहुँचओलनि।

विद्यापतिक गीत ओहि भूमिमे पनपल जतए संस्कृत विद्या आ' हिन्दू संस्कृतिक केन्द्र छल। जाहिठाम देशक विभिन्न प्रान्तसँ छात्रलोकनि विद्याध्ययनक लेल अबैत छलाह आ' विद्वान् बनि एतएसँ आपस होइत छलाह। मुदा, ई राधा-कृष्णक उपासनाक सम्प्रदायकेँ लोकप्रिय बनएबाक यशोभागी भेलाह जे विविध पुराणसँ उद्भूत रससिक्त वाणीसँ सुरूह भेल आ' संस्कृत-साहित्यसँ विकसित होइत-होइत जयदेव द्वारा उत्कर्षक शिखरपर पहुँचाओल गेल छल; जखन कि ओ समय मिथिलाक लेल अति कठिन छल, कारण बेरि-बेरि मुसलमानी आक्रमण होइत छल। एहना स्थितिमे सभसँ बढ़ि देशी माधुर्य आ' चमत्कारसँ ओत-प्रोत विद्यापतिक गीत आयल, जकर भाषा ओहि कालक आस-पड़ोसक प्रान्तसभक जनभाषासँ बेसी भिन्न नहि छल। परिणामस्वरूप पार्श्ववर्ती प्रान्तसभमे विद्यापतिक गीत अति लोकप्रिय होइत गेल।

बंगालमे विद्यापतिक महत्त्व आ' प्रभाव तखन आ'र बेसी भ' गेल जखन चण्डीदासक संग हुनक नाम लेल जाए लागल तथा बङाली विद्वान्लोकनि प्रमाणित कएलनि जे चण्डीदास अपन 'कृष्ण-कीर्तन 'मे विद्यापतिसँ पूर्णतः प्रभावित छथि ; मुदा, रमेशचन्द्र दत्त आदि कतोक विद्वान् ई सिद्ध क' देलनि अछि जे "विद्यापति आ' चण्डीदासक बीच कहिओ साक्षात्कार भेल होएत तकर कोनो प्रमाण नहि अछि आ' चण्डीदासक काव्य परवर्ती कालक थिक, मात्र हुनक रचना विशेष रूपेँ, कृष्ण-कीर्तनपर, विद्यापतिक प्रभाव पड़ल अछि। ओहि समय एहूसँ महत्त्वपूर्ण एकटा घटना ई भेल जे बङालक महान् वैष्णव संत 'चैतन्य महाप्रभु' विद्यापतिक गीतसँ पूर्ण प्रभावित भेलाह। कहल जाइछ जे विद्यापतिक गीत गबैत-गबैत आत्मविभोर भ' ओ मूर्च्छित भ' जाइत छलाह। फलस्वरूप प्रत्येक बंगाली परिवार विद्यापतिक गीतसँ ततबा प्रभावित भेल जे 'बाइबिल', 'रामायण' आदि धर्मग्रन्थ जेकाँ विद्यापतिक पदावलीकेँ लोक स्वीकार कएलक। एतबे नहि, विद्यापतिक गीतसँ बङालीलोकनि ततेक ने प्रभावित भेलाह जे मैथिलीक अनुकरणपर ओलोकनि एकटा कृत्रिम भाषामे रचना प्रारंभ क' देलनि। एहि प्रसंग डॉ. जार्ज अब्राहम ग्रिअर्सन लिखैत छथि'-"आ' ततःपर एकटा अद्भुत स्थिति उत्पन्न भेल, जे हमरा जनैत साहित्यक इतिहासमे अन्यत्र कतहु नहि देखल गेल अछि। .... हिनक गीतसभकेँ तोड़ि-मड़ोरि, झीकि-तीरि कए बङला भाषा आ' छन्दक सिकस्त कंचुकीमे कौँचि-कौँचि एकाटा एहन संकर भाषा बनाओल गेल जे ने तँ मैथिलीए रहल ने बङले। एतबे नहि बहुत कवि विद्यापतिक नकल करबामे लागि गेलाह। एहिमे जेसोर जिलाक वसंत राय विशेष उल्लेखनीय छथि। ई एहि संकर भाषामे विद्यापतिक नाम धाराए गीतसभ लिखए लगलाह, जकर बहिरंग तँ विद्यापतिक वास्तविक गीतसभक विषय-वस्तुसँ खूब मिलैत अछि, मुदा ओहिसबमे महाकविक प्रसाद आ' सौन्दर्यक सर्वथा अभाव अछि। ब्रजबूलि गीत कहि प्रसिद्ध ई नकली गीतसभ क्रमशः बङालीलोकनि मध्य विद्यापतिक वास्तविक गीतहुसँ अधिक प्रचलित भए गेल।"

एहि प्रकारक कृत्रिम भाषाक नाम पड़ल 'ब्रजबुलि' आ'ओहि 'ब्रजबुलि'मे 16म शताब्दीसँ 20म शताब्दी धरि रचना होइत रहल। डॉ. सुकुमार सेन कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्तासँ प्रकाशित अपन ग्रन्थ "हिस्ट्री ऑफ ब्रजबुली लिटरेचर' (बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1970 ई.) मे एहि ब्रजबुलि कविलोकनिक विस्तृत वर्णन देलनि अछि। एकर अतिरिक्त ब्रजबुलि गीतसभ जाहि गीत-संग्रहसभमे संकलित अछि ओहिमे 'क्षणदागीत चिन्तामणि' (1700 ई.), 'पदामृत समुद्र' (1725 ई.), 'पदकल्पतरु' (1750 ई.), 'संकीर्तनामृत' (1771 ई.), 'पदकल्पलतिका' (1849 ई.), 'गंगापदतरंगिणी' (1903 ई.), 'पदरत्नावली' (अप्रकाशित, पदकल्पतरुक परिशिष्ट) आदि अछि। किछु ब्रजबुलिमे रचित गीतसभ वङीय साहित्य परिषद् पत्रिकामे तथा रसकल्पवल्ली, रसमञ्जरी, भक्तिरत्नाकर, नायिकारत्नाकर आदि वैष्णव पदावलीसभमे छिट-फुट प्रकाशित अछि।

'ब्रजबुलि गीत' सभक विश्लेषण क' डॉ. सुभद्र झा एकरा चारि भागमे बटलनि अछि'- (i) एहन गीतसभ जकर भाषा शुद्ध मैथिली अछि। (ii) एहन गीतसभ जे शुद्ध बङला-मिश्रित मैथिली अछि। (iii) एहि कोटिक गीत जे मात्र शुद्ध बङलामे अछि। (iv) एहन गीत जे ब्रजभाषा (हिन्दी) क शब्दसभसँ मिश्रित बङला भाषामे अछि। 'ब्रजबुलि' साहित्यक प्रमुख कविगणमे ज्ञानदास (1530), गोविन्द दास कविराज (1530-1613), बल्लभदास (1530-1630), नरोत्तम दास (जन्म-1583), बंकिम चन्द्र चटर्जी (1838-94), राजकृष्ण राय, रवीन्द्रनाथ ठाकुर (1861-1941 आदि छथि। हिनकालोकनिक रचनापर विद्यापतिक प्रभाव स्पष्ट

परिलक्षित होइत अछि। जाहि प्रसंग रवीन्द्रनाथ ठाकुर " भानुसिंह ठाकुरेर पदावली"(1884) 'क कथा 'माइ रेमिनिसेन्सेज' (पृ. 136) मे कहने छथि। ई 'भानुसिंह' स्वयं ओएह छलथि।

बङालमे महाकवि विद्यापतिक ख्याति दू रूपमे भेलनि - पहिल एकटा बङला साहित्यकारक रूपमे तथा दोसर एकटा महान् वैष्णव गायकक रूपमे। बङला साहित्यकारक रूपमे हिनका बंकिम चन्द्र चटर्जी आ' रवीन्द्रनाथ ठाकुर मानैत छथि आ' आदर दैत छथि। चैतन्य महाप्रभु आ' हुनक अनुवर्तीलोकनि विद्यापतिकेँ एकटा महान् वैष्णव गायक मानैत छथि। अन्तर मात्र एतबे जे, जे पदसभ मिथिलामे शृंगारिक बुझल गेल तकरा ई लोकनि राधा-कृष्णक लीलागीत बूझि भक्तिपदक रूपमे ग्रहण कएलनि। इहो बात तथ्यपरक अछि जे विद्यापतिकेँ आइओ बङालक किछु लोक प्राचीन बङलाक कविक रूपमे मानैत छथि आ' बहुत हाल-साल धरि मैथिली साहित्य ओहिना बङला साहित्यक अंग बुझल जाइत रहल जेना आसामी आ' उड़िया साहित्य। एहीसँ अनुमान लगाओल जाए सकैछ जे बंगला साहित्यपर महाकविक रचनाक कतेक प्रभाव पडल।

V. असमियापर विद्यापतिक भाषाक प्रभाव

विद्यापति ठाकुर आसाममे एकटा वैष्णव-गायकक रूपमे प्रसिद्ध छथि। आसामक शंकरदेव देखलनि जे वैष्णव-सम्प्रदायक प्रचार-प्रसारमे ब्रजबुलि बड सहयोग प्रदान करत। तेँ ओहिठामक प्रमुख धार्मिक सुधारक शंकरदेव मैथिलीसँ प्रभावित 'असमिया ब्रजबुलि' मे गीत लिखलनि। आसाममे ब्रजबुलिमे नाटक सेहो लिखल गेल जकर नाम "अंकीयानाट" पडल। ओहि नाटकसभमे मैथिल परम्पराक मैथिली गीतसभ अछि जे विद्यापतिक गीत परम्परासँ पूर्णतः प्रभावित अछि। आसामक ब्रजबूलिमे भगवानक गीतकेँ 'वरगीत' कहल जाइत अछि। 'वरगीत 'मे सेहो विद्यापतिक गीतक प्रभाव दृष्टिगत होइछ। आसामक ब्रजबुलि साहित्यक रचनाकारलोकनिमे प्रधानतः शंकरदेव (1449-1568), माधवदेव (1489-1596), गोपाल देव (1547-1608), रामचरण ठाकुर (1521- 1600), दैत्यारि ठाकुर (1564-1620) आदि छलाह। ई लोकनि विद्यापतिसँ पूर्णतः प्रभावित छलाह।

असम प्रान्तक महान् वैष्णव सन्त शंकरदेव (1449-1568 ई.) अपन यात्राक क्रममे ई अनुभव कएलनि जे ब्रजबुलि आ' मैथिली भाषा वैष्णव मार्गक प्रचारक विलक्षण साधन होएत, तेँ ओ असममे एहि भाषाकेँ चलओलनि। मुदा, असमक ब्रजबुलि साहित्य आ' बङालक ब्रजबुलि साहित्य दुनू पृथक्-पृथक् अछि। एहि दुनूमे बहुत रास अन्तर अछि। पहिल तँ ई जे असमक ब्रजबुलि साहित्यमे राधाक चरचा धरि नहि भेल अछि। दोसर पृथकता ई अछि जे आसामक ब्रजबुलि-गीतकारलोकनि अपनामे 'दास्य-भाव' राखि रचना कएलनि, जखन कि बङालमे 'सख्य-भाव' वा पति-पत्नी भाव सेहो राखल गेल। संगहि एकटा बात आ'र अछि जे असमक लेखकलोकनि मैथिली नाटक सेहो लिखलनि जे बङालमे एकदम नहि भ' सकल ।

आसामक 'ब्रजबुलि गीत' जे विद्यापतिसँ प्रेरित अछि, एकरा दू भागमे बाँटल जा सकैछ-'वरगीत' अर्थात् धार्मिक गान तथा 'अङकेर गीत' अर्थात् 'अंकियानाट' नामसँ प्रसिद्ध नाटकसभक गीतसभ। विद्यापतिक मैथिली गोते 'क समान एहू गीतसभमे रागसभक नाम भेटैत अछि, जाहिसँ ई सहजहिँ ज्ञात भ' जाइछ जे एहि गीतसभक रचना गएबाक लेल भेल अछि। एहि गीतसभमे विद्यापतिक पदे जेकाँ 'भनिता' सेहो देल गेल रहैत अछि। आसामक ब्रजबुलि गीत चाहे ओ 'वरगीत' हो अथवा 'अङकेर गीत' ई ध्रुपद थिक आ' एकरासभक भाषा कृष्णलीलापर आधारित रहैत अछि। एकर वर्ण्य-विषयमे असमक ब्रजबुलि कविगणपर बङालक ब्रजबुलिक तुलनामे ब्रजभाषाक प्रत्यक्ष प्रभाव बेसी दृष्टिगत होइछ। एकटा बात आ'र जे आसामक 'ब्रजबुलि 'क 'वरगीत 'मे मैथिलीक ओतेक शुद्ध प्रयोग नहि भेल अछि जतेक अंकिया नाटकक गीतसभमे भेल अछि। एहि वरगीतसभमे मैथिलीक अखरौटिआ ध्वनि-तत्त्व बेसी परिवर्तित रूपमे देखल जाइछ तथा ब्रजभाषाक बहुत रास शब्दसभ सेहो घाँसिआओल गेल अछि मुदा, मैथिलीक विलक्षणता तथापि विद्यमान अछि; जेना,-दन्त्य वर्णक विशेषतः 'स'क आधिक्य भेटैछ। जाहिठाम 'य'क उच्चारण 'ज' होइछ ओतए 'ज्' लिखल जाइछ। एहिना 'य' अथवा 'व'क उच्चारण जत' अन्तस्थ ध्वनि जेकाँ होइत अछि ओहिठाम ओकरा स्थानपर ह्रस्व 'इ' तथा ह्रस्व 'उ'क प्रयोग असमिया 'ब्रजबुलि गीत 'सभमे भेटैत अछि। प्रायः एहने स्थिति विद्यापतिक पदसभमे सेहो दृष्टिगत होइछ। स्पष्टतः व्याकरणिक आ' भाषा विज्ञानक दृष्टिएँ असमक ब्रजबुलि साहित्य विद्यापतिक पदसँ प्रभावित अछि।

'वरगीत 'मे शंकरदेवकेँ अत्यन्त उल्लासक स्थितिमे पबैत छिअनि। एहिमे ओ दार्शनिक चिन्तनकेँ गीतात्मक भावक संग युक्त करबाक अपन क्षमताकेँ उपयुक्त एवं आकर्षक भाषामे व्यक्त करैत छथि। एहि गीतसभमे अनेक उपमा, उत्प्रेक्षा, अनुप्रास आ' अन्य अलंकारक उपयोग कएल गेल अछि जे एकरा भावप्रद ओ रमणीय बनबैछ। 'वरगीत' शीघ्रहि

लोकप्रिय भ' गेल तथा परवर्ती कविलोकनि द्वारा एहि कोटिक बहुत रास गीतक रचना भेल। एहि कवि-समूहमे महिलालोकनि सेहो छथि। एहिमे सर्वोत्तम रचना छनि माधव देवक जे स्वयं संगीतज्ञ छलाह। एहि प्रकारेँ आसामक अंकीयानाट हो वा 'वरगीत' अथवा 'चहिटा', सभमे विद्यापतिक पदहिँ सदृश अलंकार,लोकभाषा, गेयधर्मिता आदि दृष्टिगत होइछ। स्पष्टतः विद्यापतिक प्रभाव आसमियापर सेहो पूर्णतः पडल अछि।

शंकरदेवक अपर कोटिक पद्मक नाम अछि- 'चहिटा'। अपन तीर्थयात्राक क्रममे शंकरदेवकेँ बनारसमे संभवतः कबीरक शिष्य समुदायसँ भेँट भेल छलनि जनिकासँ ओ कबीरक 'चौतीसा काव्य' सुनलनि आ' अत्यन्त प्रभावित भेलाह। 'चौतीसा' वर्णमालाक व्यञ्जनसभक धार्मिक अभिप्रायक प्रदर्शन थिक। जेना चौसर (Chaucer) क ए.बी.सी (ABC) मे कविता लातिन (लैटिन) वर्णमालाक क्रमानुसार अक्षरसँ आरम्भ होइछ, तहिना एहि रूपक रचनामे प्रत्येक पाँती संस्कृत वर्णमालाक आनुक्रमिक व्यंजनसँ प्रारंभ होइत अछि। आसाममे ओकरे प्रतिकृति थिक- "चहिटा"।

VI. उडियापर विद्यापतिक प्रभाव

उड़ीसामे मैथिली भाषाक प्रभाव बङालक कारण पड़ल। एकर कारण ई अछि जे सर्वप्रथम 'ब्रजबुलि-पद' उडीसाक महाराज प्रतापरुद्र देवक नामसँ सम्बोधित अछि। एहि पदक रचयिता उड़ीसाक प्रसिद्ध कवि आ' नाटककार 'रमानन्द राय' छलाह। रमानन्द रायक ब्रजबुलिक पद करीब 100 उपलब्ध अछि। हिनक पदसभमे भक्तक उच्चकोटिक भावनाक दर्शन होइछ तथा एहूमे विद्यापतिए जेकाँ ई कृष्णक प्रेमलीलाक वर्णन कएलनि अछि। हिनकालोकनिक कविता विद्यापतिएक अनुसरणपर आधारित अछि। उड़ीसामे ब्रजबुलि साहित्यक अभ्युदयक मुख्य कारण बंगालक वैष्णव आन्दोलन छल। 16म शताब्दीमे चम्पत राय, महाराज प्रतापरुद्रदेव आदि ब्रजबुलि-पदक रचनाकार छलाह। सर्वविदित अछि जे बहालमे जे वैष्णव आन्दोलनक उदय भेल, ताहिमे विद्यापतिक गीतक प्रभाव अत्यधिक रहल।

पूर्वहि कहि चुकल छी जे उड़ीसामे मैथिली साहित्यक प्रभाव 16 म शताब्दीक पहिल दसकमे पड़ल। ज्ञात अछि जे 'पूजाप्रदीप' आ' 'काव्यप्रदीप 'क रचयिता महामहोपाध्याय गोविन्द ठाकुर उड़ीसाक यात्रा कएने छलाह, मुदा ओतए मुख्यतः मैथिलीक प्रभावक स्रोत बङाल रहल। एतए सभसँ पहिल ब्रजबुलि पद जे उपलब्ध भेल ओ उड़ीसाक राजा प्रतापरुद्रदेव (1504-1532 ई) केँ समर्पित छनि, जकर लेखक छथि उड़ीसाक प्रख्यात कवि आ' नाटककार 'रमानन्द राय'। डॉ. सुकुमार सेन चैतन्य महाप्रभुसँ रमानन्द रायक भेँटक विवरण एहि प्रकारेँ लिखैत छथि, "जखन चैतन्यदेव दक्षिणापथक तीर्थयात्रा आरम्भ कएलनि तखन एहि कालक एक परम प्रख्यात बङाली पंडित वासुदेव सार्वभौम हुनका निवेदन कएलथिन्ह जे विद्यानगरमे रमानन्दसँ भेँट कएल जाए। रमानन्द प्रकाण्ड पडित आ' रहस्यवादी आध्यात्मिक कविक रूपमे सुविख्यात छलाह। गोदावरीक तटपर एहि महाप्रभु आ' महापंडित दुहूक मिलन मेल। दुनूक साक्षात्कार ओ शास्त्रार्थक वर्णन कृष्णदास कविराज अपन चैतन्यचरितामृत 'क द्वितीय भागक आठम अध्यायमे विस्तारपूर्वक परम निपुणताक संग कएने छथि। चैतन्यदेव रायकेँ पुछलथिन्ह जे- "वैष्णव-धर्म आओर दर्शनक चरम लक्ष्य की थिक?" रमानन्द राय स्पष्ट उत्तर देलथिन्ह मुदा ताहिसँ महाप्रभुक समाधान नहि भेल। चैतन्यदेव आगाँ चतुरतापूर्वक गहन एवं मार्मिक प्रश्न पुछैत गेलाह आ' अन्तमे रमानन्द शास्त्रक कोनहुँ वचनक सहायतासँ अपन भाव व्यक्त करबामे असमर्थ भए गेलाह। तखन महाप्रभुकेँ कहलथिन्ह, आज्ञा हो तँ हम स्वरचित एक पद द्वारा भाव व्यक्त करी" पदक केवल दुइए चरण सुनि चैतन्यदेव ततेक भावविह्वल भए गेलाह जे आगाँ पढ़ए नहि देलथिन्ह। जतए धरि तत्कालीन साक्ष्यसँ ज्ञात होइत अछि, इएह पद 'ब्रजबुलि' (साहित्यक) क आद्य (?) पद थिक. ।'

उपर्युक्त घटना सन् 1511-12 ई. मे गोदावरी तटपर विद्यानगरमे भेल छल। रमानन्द रायक ब्रजबुलि पदसभकेँ संकलित क' प्रो. प्रियरंजन सेन एकरा प्रस्तुत कएलनि अछि। उक्त संकलनमे करीब सएसँ बेसी कृष्णभक्तिपरक विलक्षण पद अछि। एहि गीतसभक मैथिलीमे ब्रजभाषा, उड़िया आ' बंगलाक एकहिठाम संघटन भेल अछि। एहि गीतसभक विशेषता ई अछि जे एहिमे व्यक्त भक्तिभावना अत्यन्त सुरुचिपूर्ण अछि तथा कृष्णलीला वर्णन दिनक विभिन्न कालमे वर्णित अछि। 16म शताब्दीमे उड़ीसामे जे ब्रजबुलि पद-रचनाक परम्परा प्रारम्भ भेल तकर श्रेय उड़ीसाक उपर्युक्त कविलोकनिक अतिरिक्त महाराज प्रतापरुद्रदेवक महामंत्री 'चम्पतराय' आ' प्रतापरुद्रदेव स्वयं छथि। किछु-किछु पदसभ माधवीदासी, कान्हुदास आ' मुरारिक सेहो उपलब्ध अछि जे 'पदकल्पतरु' आ' 'क्षणदागीत चिन्तामणि 'मे संकलित अछि। उड़ीसाक ब्रजबुलि साहित्यक तीनटा प्रमुख कवि छथि जे 17म शताब्दीमे बेसी महत्व रखैत छथि। एहि कविमे 'राय दामोदर दास', 'चण्डीदास' आ' 'यदुपति दास'क नाम गनाओल जा सकैछ। राय दामोदर दास एवं चण्डीदास पुरीक गजपति (राजा) रामचन्द्र देव प्रथमक आश्रयमे रहैत छलाह

आ' 'यदुपतिदास'कैँ उड़ीसाक राजा नरसिंह देवक आश्रय प्राप्त छलनि। उक्त तीनू कविलोकनिक भाषा ओना तँ चण्डीदासक भाषासँ साम्य रखैत अछि; मुदा, हिनकालोकनिक गीतसभ महाकवि विद्यापतिक सरनिपर लिखल गेल अछि आ' विद्यापतिसँ पूर्णतः प्रभावित बुझाइत छथि।

VII. नेपालीपर विद्यापतिक प्रभाव

नेपालक साहित्यकारपर विद्यापतिक अत्यन्त प्रभाव अन्ये प्रान्त जेकाँ दृष्टिगत होइछ। नेपालक तराइ क्षेत्र मैथिली-भाषी क्षेत्र अछि। नेपालक राजदबारहुमे बहुत दिन पूर्व धरि मैथिल पंडित आ' विद्वानलोकनिक प्रवेश रहैत छल। स्वयं विद्यापति सेहो लखिमाक संग शिवसिंहकेँ अन्तर्धान भेलाक पश्चात् नेपाहिमे शरणापन्न छलाह। नेपाल स्थित मिथिलाक दरबारी विद्वानलोकनि विभिन्न उत्सवक अवसरपर परम्परानुसार अभिनीत होअएबला प्राचीन पद्धतिक संस्कृत नाटकमे क्रमशः अपन मातृभाषा मैथिलीक समावेश कएलनि। मैथिली धीरे-धीरे नेपालक दरबारसभक भाषा बनि गेल। नेपालक मल्ल राजालोकनि सेहो कवि छलाह आ' ओलोकनि स्वयं सेहो विद्यापतिव अनुकरणमे गीत लिखलनि; संगहि, अनेक कवि आ' गायककेँ एहि दिसि प्रेरित सेहो कएलनि। नेपालसँ कतोक शिलालेखपर अंकित गीतसभ सेहो प्राप्त भेल अछि। मिथिलाक तत्कालीन इतिहाससँ इएह ज्ञात होइछ जे मुसलमानक प्रभाव जखन अत्यधिक बढ़ि गेलैक तँ मैथिल पण्डितलोकनि समीपक प्रान्त नेपालमे जाए आश्रय लेलनि। परिणामतः मैथिली आ' नेपालीक विद्वान् एवं कविलोकनि, नाटकसभमे प्रयुक्त मैथिली गीतसभक प्रणयन पूर्णतः विद्यापति परम्पराक अनुसरणे मे कएलनि। मैथिलीक अति प्रचार नेपालमे भेल। थोड़े'क दिन घरि तँ मैथिली दरबारक भाषाक रूपमे सेहो स्वीकृत रहल। ताहू कारणेँ कविलोकनि विद्यापतिक अनुकरण क' गीतसभक रचना कएलनि।

एहि प्रकारेँ देखि सकैत छी जे विद्यापतिक गीत मिथिलेटामे लोककेँ नहि मुग्ध कएलक अपितु अन्यो भाषा-भाषीलोकनिक ध्यान अपना दिस आकृष्ट कएलक। उल्लेखनीय जे ई आकर्षण साधारण नहि छल, एहन छल जे आनो भाषा-भाषीपर ततेक प्रभाव पडल जे एहि भाषाक अनुकरण करबामे ओलोकनि थोडबो संकोच नहि कएलनि आ' एकर अनुकरण क' गौरवक अनुभव करैत छलाह। मुदा, ध्यातव्य जे प्राच्यदेश (पूर्वी भारत) मे विद्यापतिक एतेक अनुकरण, एतेक प्रशंसा, एतेक परिज्ञान आ' लोकप्रियता भेल, तथापि मध्यदेश (हिन्दुस्तान) मे हिनकापर बड़ थोड़ वा एना कहू जे नहिएँ जेकाँ दृक्पात कएल गेल। ई कहल जा सकैछ जे मध्यदेशभाषा ओ साहित्यपर हिनक प्रभाव ओतेक बेसी दृष्टिगत नहि होइत अछि। तथापि महाकवि विद्यापति आरंभहिमे अपन काव्यक प्रसंग गर्वोक्ति दए चुकल छथि जे हुनक काव्यक निन्दा नहि कएल जा सकैछ, कारण हुनक काव्य नागर (सुसंस्कृत) लोकक मनकेँ मोहि लैत अछि। विद्यापतिक विषयमे यथार्थे कहल गेल अछि जे-"वास्तवमे विद्यापति, कबीर, मीराबाइ, तुलसीदास आओर नानक केवल मैथिली, हिन्दी, गुजराती वा पंजाबीक कवि नहि थिकाह, अपितु भारतवर्षक कवि थिकाह।" एतबे नहि फ्रेंच विद्वान् Romain Rolland (रोमा रोलाँ), कुमार स्वामी, रवीन्द्रनाथ टैगोर आदि अनेक विद्वान्लोकनि जे विद्यापतिक गीतक प्रशंसाक वर्षा कएने छथि से सभटा उपर्युक्त कहल गेल तथ्यकेँ पूर्णतः प्रमाणित करैत अछि। विद्यापतिक गीतसभक फ्रेंच आ' अङग्रेजी भाषामे जे यूनेस्कोसँ डब्ल्यू. आर. आर्चर'क सम्पादकत्वमे 'लव सॉग्ज ऑफ विद्यापति' नामे प्रकाशित भेल अछि, ताहिसँ महाकवि विद्यापति अवश्ये अन्तरराष्ट्रीय (अन्ताराष्ट्रिय) कविक आसनपर प्रतिष्ठापति छथि।

VIII. अन्य भाषापर विद्यापतिक प्रभाव

ध्यातव्य जे विद्यापतिक गीतक परम्परा जे 'बौद्धगान ओ दोहा 'मे भेटैछ आ' जे परम्परा ओहूसँ पहिने छल अथवा ज्योतिरीश्वरक समयसँ होइत विद्यापति धरि पहुँचल, से की एकाएक (अकस्मात) बन्द भ' गेल। कारण ज्योतिरीश्वर आ' विद्यापतिक बीच करीब एक सए वर्षक अन्तराल अछि; एहि मध्य कोनो कविक रचना नहि भेटैत अछि; कतहु नामोल्लेख पर्यन्त नहि अछि। एहू अभावकेँ अनुपलब्धिए कहल जाएत।

विद्यापतिक प्रभाव पाश्ववर्ती चारि प्रान्तक भाषापर तँ प्रत्यक्ष रूपेँ पडबे कएल ; मुदा, जँ सूक्ष्मतासँ देखब तँ आधुनिक भारतीय आर्यभाषामे जे एतेक श्रृंगार रसक धार बहाओल गेल अछि, ओकरहुँ प्रेरणाश्रोत विद्यापतिक पदावलीए थिक जाहिमे महाकवि श्रृंगाररसकेँ चर्मोत्कर्षपर पहुँचाए देने छथि। एमहर हिन्दी साहित्य सेहो विद्यापतिकेँ अपन प्राचीन कविक रूपमे बलजोरी पकड़ने अछि। इएह कारण अछि जे चाहे ओ मैथिली हो वा बङला अथवा हिन्दी सभक प्राचीन कविक रूपमे विद्यापति स्थापित छथि आ' केओ हिनका त्यागबाक साहस नहि जुटाए पबैत अछि, ताहूमे ओकर स्वार्थ छैक। जँ विद्यापतिकेँ हिन्दी, बङला वा आन कोनो साहित्य अपनासँ पृथक् करबाक हिम्मतिओ करत तँ ओकर साहित्य कमसँ कम दू-तीन सए वर्ष अर्वाचीन भ' जाएत। मुदा तथ्य तँ तथ्य

अछि, यथार्थमे विद्यापति एकटा मैथिल छथि आ' हिनक समस्त पदावली मैथिली साहित्यक अमूल्य निधि थिक जकर प्रभाव प्रत्यक्ष वा परोक्ष रूपेँ प्रायः समस्त आधुनिक भारतीय आर्यभाषा-साहित्यपर पडल अछि।

उपसंहार

विद्यापतिक आगमन मैथिली साहित्यक ओहि कालखण्डमे भेल जाहि समय अनेक राष्ट्रीय आ' अन्तरराष्ट्रीय भाषा मात्र ठेहुँनियाँ दैत छल। मात्र विद्यापतिए एहन हस्ताक्षर छथि जनिक प्रभाव ने मात्र मिथिला अपितु मिथिलासँ बाहर चारि-चारि प्रान्त -बंगाल, आसाम, उडीसा तथा नेपालपर तँ पडबे कएल एकर अतिरिक्त विकासक बाट जोहैत अन्य उत्तर भारतीय भाषासभक सेहो पथ प्रदर्शक बनल। हिनकहिँ प्रभावक कारण बंगाल, आसाम आ' उडीसामे एकटा नवीन भाषाक उद्भव भेल जे ब्रजबुलि कहौलक। नेपालक समस्त 'संगीत नाटक' वा गीतिकाव्य स्पष्टतः विद्यापतिक प्रभावेँ मैथिली साहित्यक विशाल अट्टालिका स्थापित करबामे सक्षम भ' सकल। विभिन्नभारतीय साहित्य-जगतमे जे श्रृंगाररसक अजस्र धार बहाओल गेल अछि ओकरहुँ उत्स महाकविएक रचना थिक। निष्कर्षतः ई कहल जाए सकैछ जे महाकवि विद्यापतिक रचना, साहित्य रूपी ओ रत्नाकर अछि जाहिसँ प्रभावित भए समस्त भारतीय साहित्य अपन-अपन विकासक बाट जोहबामे सक्षम भ' सकल।

संदर्भ ग्रन्थ:

[1] मैथिली साहित्यक इतिहास, 2023, डा. विजयेन्द्र झा, प्रतिभा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर
[2] मैथिली साहित्यक इतिहास,1988, डा. जयकान्त मिश्र, साहित्य अकादेमी, नइ दिल्ली
[3] मैथिली साहित्यक इतिहास,1968, डा. दुर्गानाथ झा 'श्रीश', भारती पुस्तक केन्द्र, दरभंगा
[4] ब्रजबोलि साहित्य,1974, डा. शैलेन्द्र मोहन झा, पटना: बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी
[5] विद्यापतिकृत 'कीर्तिगाथा', 2025, डा. विजयेन्द्र झा, माण्डा पब्लिशर्स, दिल्ली